

अपनी जिम्मेवारियों से चूक गयीं नैसी

देवयानी प्रकरण में भारत-अमेरिका संबंध कटुता की जिस हद तक जा पहुंचे थे, उसके मद्देनजर भारत में अमेरिकी राजदूत नैसी पॉवेल का इस्तीफा तनिक भी आश्चर्यजनक नहीं लगता. वह अमेरिका की तरफ से भारत में नियुक्त पहली महिला राजदूत थीं. दो साल पहले इसी अप्रैल महीने में जब उन्होंने पदभार संभाला था तो अमेरिकी सेंनेट से संबद्ध विदेश मामलों की समिति को सौरी हलफनामे में कहा था कि 21वीं सदी में सुरक्षा मामलों के लिहाज से भारत अमेरिका का अग्रणी साथी है. इन दोनों के संबंध लोकतंत्र के साझे मूल्यों की बुनियाद पर कायम हैं. सो वे दोनों देशों के संबंधों को मजबूत बनाने के लिए काम करेंगी. लेकिन, दो साल की अवधि में नैसी के कामकाज हलफनामे के अनुरूप नहीं रहे. भारत में राजदूत रहते उनकी अगुवाई में अमेरिकी दूतावास ने अमेरिकी विदेश मंत्रालय को जो तार भेजे, उससे दोनों देशों के संबंधों में खटाई पड़ती गयी. अमेरिका में देवयानी की विवादस्पद गिरफ्तारी के बाद नैसी के कार्यालय से भेजे संदेश का आशय था कि भारत की प्रतिक्रिया तीखी नहीं रहेगी, क्योंकि यहां सरकार का ध्यान चुनावी तैयारियों पर है. लेकिन हुआ इसके उलट. नगरमाते चुनावी माहौल में भारत ने देवयानी मामले में तीखी प्रतिक्रिया जतायी. हालत यहां तक आ पहुंचे कि भारत में पदस्थ अमेरिकी राजनयिकों को प्राप्त विशेषाधिकारों तक में कटौती हुई. इससे भारत-अमेरिका संबंधों में अप्रत्याशित कटुता आयी. इसके पहले, अमेरिकी प्रशासन द्वारा नरेंद्र मोदी के प्रति बहिष्कारवादी रवैये को जारी रखने के पीछे भी नैसी की सलाह को अहम हिस्सा जा रहा. गौरतलब है कि मोदी के साथ नये सिरे से सामान्य संबंध कायम करने में अमेरिका ब्रिटेन व यूरोपीय संघ से पीछे रहा. अपने विदेश विभाग के प्रत्यक्ष हस्तक्षेप के बाद ही नैसी संबंधों को सामान्य बनाने के लिए मोदी से मिलने पहुंची. ऐसे वक्त में, जब भारत में नयी सरकार बननेवाली हो, अमेरिका नहीं चाहेगा कि पुराने राजदूत के रहते पैदा हुई गलतफहमियों की छाया भारत-अमेरिका संबंधों पर आगे भी कायम रहे. इस लिहाज से भारत के लिए भी नैसी का इस्तीफा एक संतोष की बात है, क्योंकि भारतीय विदेश मंत्रालय को मई के बाद नियुक्त होनेवाले नये अमेरिकी राजदूत से नये सिरे से संबंध बनाने में मदद मिलेगी.

नोटा से भी डर रहे हैं नक्सली संगठन!

नक्सलियों ने एक बार फिर चुनाव बहिष्कार का एलान किया है. इसके लिए कुछ इलाकों में एसएमएस भेजे जा रहे हैं. दरअसल नक्सलियों के लिए यह कोई नयी बात नहीं है. वे पहले भी नागरिकों को देश की लोकतांत्रिक व्यवस्था से अलग-थलग करने के लिए इस तरह के एलान कर चुके हैं. खौफ पैदा करने के लिए हिंसक घटनाओं को भी अंजाम दिया है. बिहार-झारखंड में चुनाव के दौरान हिंसा और हत्या का खेल खेला जाता रहा है. झारखंड के संताल में भी दाग लगे थे नक्सली चुनावी हिंसा के. पिछले चुनाव में 23 अप्रैल 2009 को नक्सलियों ने दुमका के काठीकुंड के आगमाछी में मतपेटी लेकर लौट रही पोल पार्टी पर हमला किया. इसमें एक चौकीदार शहीद हुआ था. आठ माह बाद, आठ दिसंबर 2009 को हुए विधानसभा चुनाव में शिकारीपाड़ा में रोड ओपनिंग पार्टी पर हमला हुआ. इसमें सीआरपीएफ के दो जवान शहीद हुए. उत्तरी बिहार में भी मतदान के दिन नक्सली हिंसा हुई. नक्सली हर दलील देते हैं कि मौजूदा लोकतांत्रिक व्यवस्था में उनका विश्वास नहीं है, क्योंकि इसमें वैसे लोग और दल जुड़े हैं, जो पूंजीवादी और सामंती सोच के हैं. इसलिए वे चुनाव का बहिष्कार कर यह बातना चाहते हैं कि चुनाव में खड़े उम्मीदवार और पार्टियां जनता को कबूल नहीं हैं, लेकिन इस बार का बहिष्कार साबित करता है कि वे लोकतांत्रिक प्रणाली को वे मानते ही नहीं. इस बार पहली बार वोटरों में उनका विश्वास इबीएम में मिलेगा. इसके जरिये वोटर अपने क्षेत्र के उम्मीदवारों को नापसंद कर सकते हैं. उनके मतों की गिती भी होगी और उसका अलग रिकॉर्ड बनेगा. यह राइट टु रिफ्यूजल है. पिछले साल पांच रायों के विधानसभा चुनाव में 11.53 करोड़ मतदाताओं में उनका इस्तेमाल किया है. यह अभिव्यक्ति के संवैधानिक अधिकार (अनुच्छेद 19-1 ए) का हिस्सा है, लेकिन हमारे देश के नक्सली संगठनों को नोटा भी कबूल नहीं है. दरअसल उन्हें डर है कि एक बार लोकतांत्रिक प्रक्रिया में शामिल होने के बाद लोग उनके प्रभाव से बाहर निकल जायेंगे. उन्हें यह भी डर है कि मतदान केंद्र के अंदर पहुंचे लोग नोटा के वटन खाने की बजाय अपनी पसंद के उम्मीदवार को कहीं वोट न कर दें. इसलिए वे बहिष्कार की भी बात रहे हैं और हिंसा की तैयारी भी.

कुछ अलग वाह रे, अंधभक्ति तेरी माया अपरंपार

भाजपा के प्रधानमंत्री पद के उम्मीदवार नरेंद्र मोदी की जमीन पर लहर भले ही उंडी पड़ती दिख रही है, लेकिन मोदी भक्त हैं कि मानने को तैयार ही नहीं. वो मोदी के बारे में जो भी कहें, आप भी हां में हां मिलायें, वरना आपकी खैर नहीं... जैसे आप ने कोई देशद्रोह कर दिया हो. सोशल मीडिया हो या प्रिंट-इलेक्ट्रॉनिक मीडिया, मोदी भक्त हर जगह ताल ठोक कर भिड़ते देखे जा सकते हैं. वे मोदी के पक्ष में ऐसे-ऐसे तर्क गढ़ते हैं कि बड़े विद्वान भी शरमा जावें. यह पहला आम चुनाव है, जिसमें कोई मुद्दा नहीं है. मुद्दा है तो सिर्फ एक. कौन मोदी के साथ है और कौन नहीं. दिखाया ऐसे जा रहा है कि जो मोदी के साथ नहीं है, वह देश के साथ घोर पाप कर रहा है. भगवा दल को दो से 182 तक पहुंचाने वाले बुजुर्ग नेता आडवाणी का पूरा कुनबा किनारे लगाने वाले मोदी भी यह मान चुके हैं कि

अब दिल्ली आन है... उनका अंदाज पीएम वाला हो चला है, उनकी हर आद से लगने लगा है कि 16 मई के बाद

उन्हीं को पीएम पद की शपथ लेनी है. बिचारथारा और सिद्धांत की बातें मोदी भक्त अपने हिसाब से तय कर रहे हैं. कोई खुशी-खुशी मोदी को पीएम बनाने में जुटा है, तो किसी-आडवाणी सरीखे नेता बुढ़ापा खराब न हो, इस मजबूरी में मोदी जाप कर रहे हैं. हमारे गजोधर भाई भी नमो रंग में हैं. तर्क देते हैं...यार जिसके जितने ज्यादा दुश्मन, वह उतना ही प्रतिष्ठित और योग्य. मोदी ने तो उस कहावत को भी गलत साबित कर दिया है, जिसमें कहते हैं कि अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता. उन्होंने तो अकेले ही भाड़ फोड़ डाला है. अपनी पार्टी में जैसा चाहा, किया. चुन-चुन कर कहीं की ईंट-कहीं का गोड़ा जुटा कर, भानुमुक्ति का कुनबा जोड़ लिया. अपने ताकत रह गये पर अतिशयित नेता आनन-फानन में भगवा दल के उम्मीदवार बन बैठे. यूपी में तो मजाक ही बन गया है... पार्टी बदल गयी, प्रत्याशी पुराना वाला ही है.

गजोधर भाई के मुंह से मोदी चालीसा सुन कर मैंने कहा, आप तो गजब हैं भाई, मोदी पीएम नहीं बनेंगे तो क्या देश धम जायेगा. गजोधर बोले, धम नहीं जायेगा मित्र, धम गया है. क्या आपको लग रहा है कि दिल्ली में कोई सरकार है? एक बात और, मोदी भक्तों से भिड़ने के चक्कर में मत पड़ना. नंगों के मुंह लगोगे, तो खुद नंगे हो जाओगे. इसे अटल-आडवाणी वाला भगवा दल समझने की भूल भी मत करना. इसके सारथि बाबा रामदेव सरीखे लोग हैं, जो जिसको जो चाहें, कहें. लेकिन कोई उनके खिलाफ बोल कर देख ले. मैंने कहा, आजकल मोदी केलिए एक अजीब-सी अंधभक्ति दिख रही है. कोई भी बुद्धिजीवी हो या राजनीतिज्ञ, चाहे वह नोबेल प्राइज विजेता हो या पत्रकार... मोदी के खिलाफ बोले जा उनका झूठ पकड़ ले, वह स्ट्रेटोवही-दलाल व भ्रष्ट है और अपराधी हो या भ्रष्ट, सदिग्ध हो या लंपट, मोदी की झूठी भी तारीफ कर रे, तो सच्चा देश भक्त. वाह रे अंध भक्ति!

प्रभात खबर \ अभिमत भाजपा के इस ‘दलित प्रेम’ की हकीकत



संजय कुमार
डायरेक्टर, सीएसडीएस
 sanjay@csds.in

बिहार में भाजपा को जरूरी लगा कि वह अपने नेताओं की नाराजगी के बावजूद दलित मतदाताओं के बीच पैठ बनाने के रामविलास पासवान के साथ गंतबंधन करे. अब यह प्रयोग कितना सफल रहा, यह जानने के लिए नतीजों का इंतजार करना ही होगा .

हम तोहरा पे राजी ना...



चंचल
सामाजिक कार्यकर्ता
 samtaghar@gmail.com

...लेकिन अब सब ठीक हो रहा है. गुब्बारा पिचक गया है... नवल ने ठहाका लगाया- पिचका नहीं है दद्दा! पिचका होता तो दुबारा फूल सकता था. यह तो फट गया है. जैसे लोलारक की सायकिल भ्रष्ट हुई रही...

ज्ञान ग्राफिक्स

अप्रैल, 2013 से जनवरी, 2014 के दौरान भारत से कृषि उत्पादों का निर्यात पिछले तीन सालों से लगातार वृद्धि के बाद उच्चतम स्तर पर रहा. बंपर उत्पादन और सरकारी समर्थन इसकी मुख्य वजह मानी जा रही है. भारतीय वाणिज्य मंत्रालय के अंतर्गत डायरेक्टर जनरल ऑफ कॉमर्शियल इंटेलिजेंस एंड स्टेटिटिक्स द्वारा जारी आंकड़ों में इस निर्यात के अगले कुछ सालों तक बढ़ने की उम्मीद जतायी गयी है.

आधार कार्ड से गैस सस्सिडी बेकार

पिछले दिनों एक पेट्रोलियम कंपनी ने आधार कार्ड के जरिये बैंक में दी जा रही गैस सस्सिडी के बारे में जनता से सुझाव मांगे हैं. इस पर मेरी राय यह है कि गरीब के लिए गैस सिलिंडर के लिए देगुनी रकम देना मुश्किल है. और बार-बार बैंक में वृत्ती हेतु जाना एक बड़ी और नयी परेशानी होगी. इस काम के लिए बैंक में अलग से भीड़ जुटने लगेगी और इससे कर्मचारियों और जनता को सारी परेशानी उठानी पड़ेगी. इस प्रक्रिया के आ जाने से गैस की आपूर्ति और सस्ती उपलब्धता के अभाव में लोग ईंधन हेतु लकड़ी और गोबर के उपले पर आश्रित होंगे, जिससे पर्यावरण को तो नुकसान होगा ही, इसके अलावा वायु प्रदूषण से सांस संबंधी भयंकर बीमारियां बढ़ेंगीं. ऐसे में यह स्कीम बिलकुल गलत है. इससे बढ़िया तो राजा का कार्यकाल था जब गलियों में आवाज लगाकर गैस सिलिंडर दिये जाते थे.

वेद प्रकाश, ई-मेल से

पर्यावरण है तो जीवन है

इनसानी जिंदगी हमेशा से ही पर्यावरण पर निर्भर रही है, फिर चाहे जरूरत रोटी की आयी हो या कपड़े की या फिर मकान की. मानव सभ्यता आदि-अनंत काल से ही पर्यावरण से ताल-मेल करते हुए फल-फूल रही है. लेकिन आज हमारी महत्वाकांक्षाएं इस जीवनवादी पर्यावरण पर भारी पड़ रही हैं. इसका नतीजा ग्लोबल वार्मिंग के रूप में सामने आया है. आज अगर हम सचेत नहीं हुए, तो वह दिन दूर नहीं जब हम विनाश के कगार पर खुद को खड़ा पायेंगे. जरूरत है जीवनशैली में थोड़े से परिवर्तन की. अपनी लाइफस्टाइल को आधुनिक शैली में ढालने के लिए हम अन्जाने में ही पर्यावरण को नुकसान पहुंचाते हैं. जैसे कि बिना किसी जरूरत के कागज का इस्तेमान करना, कम दूरी को तय करने के लिए भी मोटरवाहन का उपयोग करना आदि. इन सब से बचने से पर्यावरण दुरुस्त होगा.

आनंद कानु, दिल्लीगुड़ी

बिहार में रामविलास पासवान की लोक जनशक्ति पार्टी के साथ भारतीय जनता पार्टी का गंतबंधन दलित मतदाताओं को रिझाने की भाजपा की एक सोची-समझी रणनीति का हिस्सा लगता है. हालांकि इस वक्त यह केवल कयास ही लगाया जा सकता है कि इस गंतबंधन के कारण पार्टी बिहार में दलित मतदाताओं को रिझाने में कामयाब होगी या नहीं? महत्वपूर्ण सवाल यह भी है कि पिछले कुछ चुनावों में कुर्मी और कोयरी जातियों के मतदाताओं का भरपूर समर्थन हासिल करनेवाली भाजपा जदयू से गंतबंधन टूटने के बाद इस नुकसान की भरपाई कर पायेगी या नहीं? पिछले कुछ चुनावों के दौरान भाजपा इन दोनों जातियों के मतदाताओं के ज्यादातर मत इसलिए हासिल कर पायी थी, क्योंकि इन मतदाताओं के बीच जदयू की गहरी पैठ है और तब बिहार में जदयू के साथ भाजपा का गंतबंधन था. इसलिए यह आशंका गैरवाजिब नहीं है कि जदयू से नाता टूटने के कारण भाजपा को राज्य की दो प्रमुख उच्च पिछड़ी जातियों के मतों का नुकसान उठाना पड़े सकता है. लोजपा के साथ गंतबंधन से इस नुकसान की कितनी भरपाई होगी, इसका सही उत्तर तो चुनावी नतीजे के बाद ही मिल सकेगा, लेकिन फिलहाल इस गंतबंधन के जरिये भाजपा राष्ट्रीय स्तर पर यह बड़ा संदेश देने में सफल रही है कि नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में वह दूसरी पार्टियों के लिए ‘अछूत’ नहीं होगी, जैसा कि उसके कुछ आलोचक बता रहे थे.

लोजपा के साथ गंतबंधन के बाद भाजपा विभिन्न राज्यों में कुछ और क्षेत्रीय पार्टियों को अपने साथ जोड़ने में कामयाब रही है. मसलन, यूपी में अपना दल, हरियाणा में जनहिंद कांग्रेस, महाराष्ट्र में आरपीआइ (अठवाले) व स्वाभिमान पक्ष, तमिलनाडु में एमडीएमके, दीएमडीके, पीएमके, केएमडीके और आइजेके आदि. इनके अलावा कई पार्टियां ऐसी भी हैं, जो चुनाव से पहले भाजपा के साथ गंतबंधन के लिए बहुत इच्छुक भले न हों, चुनाव के बाद एनडीए यदि बहुमत के आंकड़े से थोड़ा पीछे रहा, तो वे सरकार का साथ देने के लिए तैयार हो जाएंगी.

हमारे यहां राजनीति में कोई किसी का स्थायी दोस्त या दुश्मन नहीं होता है. हमने अकसर पार्टियों को गंतबंधन और नेताओं को पार्टी बदलते देखा है. दरबंदल के इस खेल का पूरा ड्रामा हम पिछले कुछ हफ्तों के दौरान बिहार में भी देख चुके हैं. लेकिन यहां महत्वपूर्ण सवाल यह है कि क्या बिहार में भाजपा के लिए दलित वोटों की इतनी ज्यादा अहमियत है, कि वह अश्विनी चौबे, गिरिराज सिंह, सीपी ठाकुर जैसे

साहेब की अकल सही सलामत रहे, परिदे उड़ान भरते रहें, चौपाये घास खाएं, ऊंट खीस निपारे बंदर को चिढ़ावे, कहता चाहे बौर, सुनाता चाहे सरेख आज एक किस्सा सुनाता हूं. सुना-सुनाया किस्सा है. किसी नगर में एक सयाना पंसारी रहता था. वे ईमान था. लालची और लंपट था. कायर था और गोपंडी था. उसे झक सकार हुई कि किसी और देश में जाकर व्यापार करना चाहिए. अपने तो सब लुट चुके हैं, अब औरों को भी लूटने का धंधा करना चाहिए, सो एक दिन वह एक बैलगाड़ी पर पूरे सज्जो सामान के साथ पूरे परिवार को भी बैठा लिया और निकल पड़ा लूट यात्रा में. झूठ बोलते, फरेब रचते, हवाबाजी करते आगे बढ़ा जा रहा था, कि अचानक एक भैंड़िया उसके पीछे लग गया. उस लंपट की अकल देखो कि वह एक-एक करके अपने परिवार के सदस्यों को नीचे फेंकता गया. इससे उसे फायदे थे, एककि भैंड़िया उसे खायेगा और हम आगे बढ़ जायेंगे. दूसरा कि जिस देश में हम जायेंगे, वहा कोई हमें रोकने-टोकने वाला नहीं रहेगा और हमारी असलियत छुपी रह जायेगी. इतना ही नहीं, गाड़ी उलार न होने पाये इसके लिए वह नये पर दंतहीन जानवरों को अपनी गाड़ी पर लादता भी रहेगा. लेकिन होनी का किसको पता. आगे एक खन्खट दिखा.

वहां एक शेर मिला... आगे ब्या हुआ दादू? पर क्यूम दादू कब रुकनेवाले थे, हबीब की बदमिजाज बकरी उनकी लुंगी मुंह में दबाये भागी जा रही थी. आगे-आगे बकरी पीछे-पीछे क्यूम मियां और सवे आगे क्यूम की आवाज जो पब्लिक के लिए थी- पकड़ लो भाई, ई ससुरी तो जी का जंजाल बन गयी है. अंततः बकरी चौराहे पर पकड़ आ आ ही गयी. चौराहे पर लुंगी मिली. लुंगी का मुआझा हुआ. लुंगी सही सलामत रही. बकरी वापस पुजारी के खेत में कूटी और क्यूम मियां लालसाहेब की दुकान पर. चौराहे पर भट्ठी गंग मिली, उससे ज्यादा गर्म राजनीति रही. मद्दू का कहना चल रहा था- गुब्बारे की हवा निकल गयी है. उसकी असलियत खुल गयी है. चिखुरी ने मुँहों के नीचे से मुस्कुराते हुए जिज्ञासा जाहिर की- किसकी असलियत की बात हो रही है भाई? मद्दू ने जवाब दिया- उसी की बात हो रही है दादू, जो प्रधान मंत्री बना दौड़ रहा था. चिखुरी का जायका बिगड़ गया- कोई पोलिटिकल बात करो भाई! कौा अधिया को नागवार लगा- वो राजनीतिक नहीं है का? चिखुरी जोर से चीखे-

आगे ब्या हुआ दादू? पर क्यूम दादू कब रुकनेवाले थे, हबीब की बदमिजाज बकरी उनकी लुंगी मुंह में दबाये भागी जा रही थी. आगे-आगे बकरी पीछे-पीछे क्यूम मियां और सवे आगे क्यूम की आवाज जो पब्लिक के लिए थी- पकड़ लो भाई, ई ससुरी तो जी का जंजाल बन गयी है. अंततः बकरी चौराहे पर पकड़ आ आ ही गयी. चौराहे पर लुंगी मिली. लुंगी का मुआझा हुआ. लुंगी सही सलामत रही. बकरी वापस पुजारी के खेत में कूटी और क्यूम मियां लालसाहेब की दुकान पर. चौराहे पर भट्ठी गंग मिली, उससे ज्यादा गर्म राजनीति रही. मद्दू का कहना चल रहा था- गुब्बारे की हवा निकल गयी है. उसकी असलियत खुल गयी है. चिखुरी ने मुँहों के नीचे से मुस्कुराते हुए जिज्ञासा जाहिर की- किसकी असलियत की बात हो रही है भाई? मद्दू ने जवाब दिया- उसी की बात हो रही है दादू, जो प्रधान मंत्री बना दौड़ रहा था. चिखुरी का जायका बिगड़ गया- कोई पोलिटिकल बात करो भाई! कौा अधिया को नागवार लगा- वो राजनीतिक नहीं है का? चिखुरी जोर से चीखे-

भारत से कृषि उत्पादों के निर्यात में लगातार वृद्धि



● डब्ल्यूटीओ के आंकड़ों के मुताबिक कृषि एवं खाद्य उत्पादों का कुल वैश्विक निर्यात एवं आयात क्रमशः 1.66 ट्रिलियन डॉलर और 1.82 ट्रिलियन डॉलर का है, जिसमें भारत की हिस्सेदारी क्रमशः 2.07 फीसदी और 1.24 फीसदी है .



अपने कई वरिष्ठ नेताओं की नाराजगी और विरोध के बावजूद रामविलास पासवान के साथ गंतबंधन करने के लिए आगे बढ़ी?

बिहार की राजनीति में दलित वोटों की अहमियत इसलिए है, क्योंकि राज्य के कुल मतदाताओं में दलितों की हिस्सेदारी 16 फीसदी है. यहां के कई चुनाव क्षेत्रों में वे नतीजा तय करने में अहम भूमिका निभाते हैं. राज्य के सात लोकसभा क्षेत्रों में कुल मतों में दलितों की हिस्सेदारी 20 फीसदी से अधिक, जबकि अन्य 23 क्षेत्रों में 15 फीसदी से अधिक है. बिहार जिस तरह से भाजपा-लोजपा, कांग्रेस-राजद और जदयू के बीच त्रिकोणीय मुकाबले की ओर बढ़ रहा है, मतों का मामूली प्रतिशत भी इधर-उधर होने से किसी पार्टी या गंतबंधन के नतीजों पर बड़ा असर पड़ सकता है. इसीलिए दलित मतदाताओं को लुभा कर कुछ अतिरिक्त मतों का जुगाड़ करने की रणनीति के तहत भाजपा अपने कई वरिष्ठ नेताओं की नाराजगी के बावजूद लोजपा के साथ गंतबंधन के लिए आगे बढ़ी.

राज्य में उच्च जातियों के मतदाताओं के बीच भाजपा की मजबूत पैठ है. आकलन के मुताबिक जदयू के साथ गंतबंधन के दौर में हुए चुनावों में उच्च जातियों के 55 से 60 फीसदी तक मत भाजपा के खाते में जाते रहे हैं. सीएसडीएस के हालिया जनमत सर्वेक्षण संकेत देते हैं कि पिछले कुछ महीनों में उच्च जातियों के मतदाताओं का भाजपा के पक्ष में ध्रुवीकरण हुआ है. सर्वे में शामिल उच्च जातियों के करीब 75 फीसदी लोगों ने कहा कि आम चुनाव में भाजपा उसकी पहली पसंद है. उधर, अति पिछड़ी जातियों के मतदाताओं ने भी पिछले विधानसभा चुनाव में भाजपा उम्मीदवारों के पक्ष में अच्छी-खासी संख्या में मतदान किया था और जय नारायण प्रसाद निपाद के भाजपा में आने के बाद उम्मीद जतायी जा रही है कि आम चुनाव में भी इन जातियों के काफी मतदाता भाजपा

चोप! न वो राजनीतिक है न उसका गिरोह. कौन ने गमझे से पैर झाड़ा और खुदक में बोले- वह पार्टी है कि गिरोह है? चिखुरी ताव खा गये- तो जे बात तुम उनसे जा कर क्यों नहीं छुठे? वो खुद कहता है कि वह राजनीतिक संगठन नहीं है, बोलता है कि नहीं? जब राजनीतिक नहीं है तो क्या है, यह तो बात है? और सुनो अडवाणी नाराज हूए तो कौन पहुंचा था ममाने? यह राजनीतिक सवाल नहीं था? सारे राजनीतिक फैसले वो ले और बोले कि राजनीतिक सवाल नहीं है. नवल ने आंखें गोल की. -दद्दा हम सुने रहे की आजकल हूआं मान-मनोवल चालत बा? लालमुनी चौबे भी मनाये गये? टंडन मनाये गये. कलराज मनाये गये. सुभमा हर्त्ये से उखड़ी पड़ी हैं. नकवो साहिर से भिड़े पड़े हैं? मद्दू ने पत्रकारिता जोड़ी- जापानी भाषा में इसे हाराक्रीरी बोलते हैं. जैसे अपने यहां आत्महत्या होती है. ठीक वैसे. अपनी नश कर आदमी मारता है. हियां दोनों काम हो रहा है. कुल बड़के फीच के डोरी पे दाल दिये गये हैं सूखने के लिए. और हर घर के बाहर पड़े कबाड़ को कंधे पे लादे उठे चमकाया जा रहा है.

दद्दा! उमा भारती को सुना आपने? गुजरत जाकर उनके ही घरे में सच्चाई बोल आयी. बोली यह विकास पुरुष नहीं है विनाश पुरुष है. आज पूरा गुजरत भय में जी रहा है. और भे बहुत कुछ बोला है. ऐसी फजीहत तो कभी एसी की नहीं देखी.

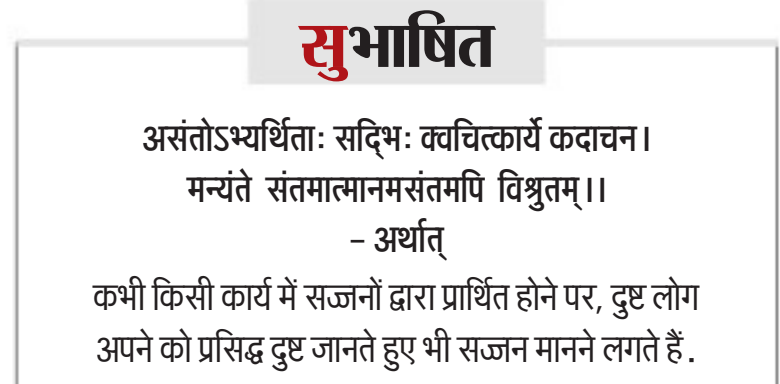
बात जारी थी कि अचानक लालसाहेब अपनी मादरीजुबाब पर उतर आये- चुनाव जाये... एषी-पे. इम तो किसी को भी बोट ना देवे... चिखुरी मुस्कुराये- कोई वजह? लालसाहेब और लाल हो गये- इस चुनाव में गांव की कहीं दिखात बा? किसान मजदूर कहीं चर्चा में बा? कोई मुद्दा बताओ जो इस चुनाव में हो? बस हवा बा, पानी बा, कटहल बा... बाबा जी का... बस! चिखुरी ने रोका.

सब रुक गये. चिखुरी ने फैसला सुनाया- लहर किसी की नहीं है, और अगर है भी तो सरकार के खिलाफ है. सो भी ये डिब्बेवालों की तरफ से फैलायी गयी है. लेकिन अब सब ठीक हो रहा है. गुब्बारा पिचक गया है... नवल ने ठहाका लगाया- पिचका नहीं है दद्दा! पिचका होता तो दुबारा फूल सकता था. यह तो फट गया है. जैसे लोलारक की सायकिल भ्रष्ट हुई रही... और नवल चलते बने... है तू आव अंगन... लालसाहेब को याद आया, इमरजेंसी में जब वे बनारस जेल में बंद रहे तो लालमुनी चौबे यही गाना गाते रहे तू आव अंगना...

को वोट देंगे. सीएसडीएस के हालिया सर्वे इस रझान की पुष्टि करते हैं. यहां तक कि सर्वे में शामिल यादव, कुर्मी और कोयरी जाति के बहुत से मतदाताओं ने भी कहा कि वे आम चुनाव में भाजपा के पक्ष में मतदान करेंगे. सर्वे में शामिल 25 फीसदी यादव मतदाताओं ने कहा कि लोकसभा चुनाव में भाजपा उनकी पहली पसंद होगी. यह रझान भाजपा में हाल में शामिल हुए रामकृपाल यादव और उर्पेंद्र प्रसाद कुशवाहा जैसे नेताओं के प्रभाव और भाजपा द्वारा दलित कतिशोर यादव को विपक्ष का नेता मनोनीत किये जाने जैसे फैसले का नतीजा हो सकता है.

अब जबकि भाजपा उच्च पिछड़ी जातियों के साथ अति पिछड़ी जातियों में भी एक हद तक पैठ बनाने में सफल होती दिख रही है, उसके लिए जरूरी था कि वह दलित मतदाताओं के बीच पैठ बनाने के लिए भी कोई बड़ा कदम उठावे. जदयू के साथ गंतबंधन से पहले राज्य में दलित मतदाताओं के बीच भाजपा कभी लोकप्रिय नहीं रही, लेकिन गंतबंधन के बाद हुए चुनावों में पार्टी को दलित मतदाताओं के काफी मत मिले थे. पिछले कुछ लोकसभा एवं विधानसभा चुनावों के दौरान राज्य के करीब 30 फीसदी दलित मतदाताओं ने भाजपा-जदयू गंतबंधन के पक्ष में मतदान किया है. वैसे, राज्य सरकार की महादलित संबंधी नीतियों के बाद दलित मतों का विभाजन हुआ. इममें जहां पासवान जाति के वोटरों ने बड़ी संख्या में लोजपा के पक्ष में मतदान किया, वहीं दूसरी दलित जातियों के मतदाताओं का जदयू-भाजपा गंतबंधन के पक्ष में ध्रुवीकरण हुआ है. 2010 के विधानसभा चुनाव के दौरान पासवान जाति के करीब 55 फीसदी मतदाताओं ने राजद-लोजपा गंतबंधन के पक्ष में, जबकि करीब 21 फीसदी ने जदयू-भाजपा गंतबंधन को वोट दिया था.

भाजपा की इस दृष्टि कि आगामी आम चुनाव में दलित मतदाता उसके चुनावी गणित में शामिल नहीं होंगे. जाहिर है, अपने नेताओं के विरोध के बावजूद पासवान के साथ गंतबंधन के पीछे उसका यही डर काम कर रहा था, न कि पार्टी का दलित प्रेम. लोजपा के समर्थन आधार में चुनाव-दर-चुनाव कमी के बावजूद खासकर पासवान जाति के मतदाताओं में रामविलास की लोकप्रियता बरकरार है. ऐसे में जिन संसदीय क्षेत्रों में दलित मतदाताओं और खासकर पासवान मतदाताओं को ठीक-ठाक संख्या है, वहां भाजपा को इसका लाभ मिल सकता है. हालांकि इस गंतबंधन से उच्च जातियों के मतदाताओं में नाराजगी का कयास कितना सही होगा, यह जानने के लिए हमें नतीजों का इंतजार करना होगा.



परमात्मा की अदृश्य काया

टु स भौतिक संसार में भी आत्मा का साक्षात्कार किया जा सकता है. परम सत्य के वास्तविक ज्ञाता भलि-भलित जानते हैं कि आत्मा का साक्षात्कार- ब्रह्म, परमात्मा तथा भगवान- इन तीन रूपों में किया जा सकता है. आत्मा का साक्षात्कार ज्ञान की पूर्णता है. विनम्रता से लेकर भगवद् साक्षात्कार तक की विधि भूमि से चल कर ऊपरी मंजिल तक पहुंचने के लिए सीढ़ी के समान है. किंतु जब तक मनुष्य ऊपरी मंजिल पर नहीं पहुंच जाता, जो कृष्ण का ज्ञान है, तब तक वह ज्ञान के निम्नतर अवस्था में ही रहता है. भगवद्गीता में यह स्पष्ट कहा गया है कि विनम्रता के बिना ज्ञान संभव नहीं है. यद्यपि जीव प्रकृति के कठोर नियमों द्वारा ठुकराया जाता है, फिर भी वह अज्ञान के कारण सोचता है कि 'मैं ईश्वर हूं' यदि कोई ईश्वर की बराबरी करते हुए आध्यात्मिक ज्ञान में प्राप्ति करना चाहता हो, तो उसका

प्रयास विफल होगा. मनुष्य को विनम्र होना चाहिए, परमेश्वर के प्रति विद्रोह के कारण ही मनुष्य प्रकृति के अधीन हो जाता है. जिस प्रकार सूर्य अपनी अनंत किरणों को इस संसार पर फैलाता है, उसी प्रकार परमात्मा भी सर्वव्यापी रूप में अपनी अदृश्य काया को फैलाते हैं. उनमें आदि शिक्षक ब्रह्म से लेकर चैटी तक के सारे जीव स्थित हैं. अतएव परमात्मा सर्वव्यापक हैं. लेकिन आत्मा यह नहीं कह सकती कि उसके हाथ, पांव तथा नेत्र चारों दिशाओं में हैं. परमात्मा अपना हाथ असीम दूरी तक फैला सकता है, किंतु आत्मा ऐसा नहीं कर सकती.



नयी आर्थिक नीतियां किसके लिए?

बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने एक कार्यक्रम में कहा कि इन चुनावों में पार्टियों और नेताओं के पक्ष में इतना जो प्रचार हो रहा है, इसके लिए भरपूर पैसे लगाये जा रहे हैं. ये पैसे चुनाव में निवेश के तौर पर लगाये जा रहे हैं. एक बड़ा रणनीति वर्ग ऐसा कर रहा है, जिसमें उसका स्वार्थ निहित है. इस निवेश का उन्हें भरपूर मुनाफा मिलने वाला है. भविष्य में बननेवाली सरकार की आर्थिक नीतियां इन लोगों की स्वार्थ पूर्ति के लिए ही बनेंगी. आम इंसान को इससे क्या फायदा होगा. इस बात से उस पूंजीपति वर्ग को कोई फर्क नहीं पड़ता है. देश अभी भ्रष्टाचार, महंगाई और बेरोजगारी के दौर से गुजर रहा है, ऐसी परिस्थिति में देश की आर्थिक नीतियां भविष्य में काफी महत्वपूर्ण होंगी. जरूरी यह है कि भविष्य में बननेवाली सरकार सबका ध्यान रखेगी, जिससे देश का समग्र विकास सुनिश्चित हो.

तन्मय बनर्जी, जमशेदपुर

इंटरनेट का सदुपयोग हो

इंटरनेट जनसंचार का एक ऐसा साधन है, जिसने दुनिया को अपनी मुठ्ठी में कर लिया है. यह एक ऐसा साधन है, जिसमें किताबों की सारी सुविधा आपकी सुविधा के हिसाब से स्क्रीन पर उपलब्ध है. साथ ही रेडियो, टेलीविजन, पत्रक, सिनेमा के चारों गुण इंटरनेट में विद्यमान हैं. इंटरनेट से दुनिया के सारे देशों के खबरों को आप देख और सुन सकते हैं. चुनाव में कौन-सा प्रत्याशी कैसा है, इसके बारे में अपनी राय लोगों के साथ बांट सकते हैं. आप इंटरनेट के जरिये दुनिया के किसी भी प्रोग्राम से जुड़ सकते हैं. बचपन के खोये मित्र को आप इंटरनेट पर फेसबुक के जरिये ढूंढ सकते हैं. इंटरनेट से विद्यार्थी को शिक्षा की सुविधा के नये द्वार खुलें हैं. नयी-नयी घटनाएं, सूचनाएं आपको इंटरनेट के माध्यम से मिल सकती हैं. तो आएइ इसका सदुपयोग कर हम एक तकनीक सक्षम भारत की नींव बुलंद करें.

परिखल मुर्मू, दुमका

लीजिए पुरस्कार



राजकुमल प्रकाशन

पत्र-लेखन को प्रोत्साहित करने के लिए हम सर्वश्रेष्ठ पत्र लेखकों को पुरस्कृत करते हैं. आपके पत्रों का स्वागत है. पत्र में फोन नंबर भी दें.

- पोस्ट करें : प्रभात खबर, 15 पी, इंडस्ट्रियल एरिया, कोकर, रांची- 834001
- मेल करें : ई-मेल संक्षिप्त व हिंदी में हो. लिंपि रोमन भी हो सकती है. eletter@prabhatkhabar.in
- फैंसक करें : 0651-2544006 पर